'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ९२ | वाराणसी, शनिवार, १५ अगस्त, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

बटलख (कश्मीर) २८-७-'५९

समाज-विज्ञान का पहला सूत्र—बाँट बाँटकर खाओ

पहाड़ की तरफ से बुलर में पानी जाता देखकर आँखों को सुकून होता है। ये पहाड़ अपने पास थोड़ा पानी रखते हैं, क्योंकि इनके पास थोड़े दरख्त (पेड़) हैं और बाकी सारा पानी भेज देते हैं। इस तरह सारे मालिकों को चाहिए कि वे बेजमीनों को जमीन दे दें।

बाँट-बाँट कर खाओ

यह काम यहाँके कारकूनों (कार्यकर्ताओं) को करना चाहिए। हम कारकून कहाँसे लायेंगे? क्या हमारे पास जखीरा (भंडार) है? आप जितने लोग बैठे हैं, सब हमारे कारनून हैं। कोई काँग्रेस, कोई पी० एस०पी०, कोई नेशनल काँन्फ्रेन्स, कोई डेमोक्रेटिक नेशनल काँन्फ्रेन्स के कारनून हैं। परंतु ये सारे कारनून एक-दूसरे से टकराते हैं। हमें टकरानेवाले कारनून नहीं चाहिए। हमें प्यारवाले कारनून चाहिए। हमारा कोई इजारा (पार्टी) नहीं है। इसलिए जिनको हमारी बात जँचे, वे हमारे कारनून बनें।

आपको हमारे कारनून बनने के लिए अपना हाथ खोलना चाहिए और फिर लोगों के पास जाकर समझाना चाहिए कि देखो भाई, हमने शक्कर खायी, तुम भी शक्कर खाओ। मेरे पास १० कनाल जमीन थी, उसमें से ५ कनाल दान दे दी। तुम भी दो। मुझे देना बड़ा मीठा लगा। तुम्हारे पास भी कुछ जमीन है। उसमें से कुछ-कुछ दो।

यह काम किसको करना है?

प्यासा पानी माँगता है। उसे पानी पिलाया जाता है। पानी पिलानेवाले को तसल्ली मिलती है और पानी पीनेवाले को तसल्ली मिलती है। लेकिन पीनेवाले से ज्यादा तसल्ली पिलानेवाले को होती है। वैसे ही बेजमीन को हम जमीन देते हैं तो उसे तो खुशी होगी, लेकिन हमारी, देनेवाले की खुशी उससे भी ज्यादा होगी। बाप जब लड़की देता है तो उसका और जमाई का प्यार हो जाता है। उसी तरह जमीन देनेवाले और लेनेवालों का आपस में प्यार हो जायगा।

हम यह दान देने का विचार समझाते हुए घूम रहे हैं। आप इस विचार को समझिये और यह तय कीजिए कि जितनी भी जमीन आपके पास है, उसमें से कुछ न कुछ अवश्य देंगे। अगर ४ कनाल हो तो उसमें से २ कनाल दीजिये। दिये बगैर मत रहिये। कश्मीर-वैली में जितने मालिक हैं, उन सबने दिया, ऐसा होना चाहिए।

> हम एक-दूसरे पर प्यार करें, इतना ही काफी नहीं है। हमें एक-दूसरे का आदर करना चाहिए। किसीमें दोष नहीं है, ऐसी बात नहीं। संतरा है और छिलका भी है ही। हम दूसरे के दोष नहीं देखेंगे, गुण ही देखेंगे तो सामनेवाले के दोषों में सुधार नहीं हो सकेगा, ऐसा मानना भी गलत है। सच तो यह है कि अगर हममें आत्मभाव और करुणा होगी तो अपनी दृष्टि से ही दूसरों के दोष दूर हो जायेंगे।
>
> दूसरे के दोष दीखते हों तो वह विवेक की अवस्था है। विवेकावस्था को सर्वोत्तम माननेवाले भी कुछ लोग हैं। लेकिन मैं मानता हूँ कि वह सर्वश्रेष्ठ अवस्था नहीं है। किसीके दोष ही न दीखें, यह श्रेष्ठ अवस्था है। परन्तु जब तक यह अवस्था नहीं आती, तब तक दूसरों के गुणों का हम आदर करते रहें।
>
> मैं कहना चाहता हूँ कि प्रेम उतना मुश्किल नहीं है, जितना आदर मुश्किल है। दोषों के साथ भी हम प्रेम कर सकते हैं, लेकिन होना चाहिए आदर! आदर के बिना ब्रह्मविद्या संभव नहीं है। ब्रह्मदर्शन का आरम्भ आदर से होता है। ◆

मैंने देखा कि गाँव-गाँव में अगर हमारे कारकून लोगों के पास पहुँचते हैं और यह विचार समझाते हैं तो लोग विचार समझते हैं और दान भी देते हैं। इसलिए मेरे भाइयो, दिल खोलकर बात करो। मुझे यकीन है कि यहाँ जितने जमीन के मालिक हैं, उतने दान-पत्र मिलेंगे।

दान-पत्र हासिल करने का काम मैं नहीं करूँगा, आपको करना होगा। बाबा का काम पैगाम पहुँचाने का है। पैगाम पहुँचाकर वह चला जायगा। हिसाब रखने का काम उसका नहीं है। बाबा आया है, इसका फायदा उठाया तो आपका लाभ है और फायदा नहीं उठाया तो आपकी इच्छा। बाबा का तो न लाभ है और न बिगाड़। बाबा ने अपना फर्ज अदा कर लिया।

हम उसके औजार बनें

ऐसे हम करही क्या सकते हैं? सब कुछ करनेवाला तो एक ही है, जो हम सबका मालिक है। जिसकी रोशनी से हम सब रोशन हैं। उसीने मुझको जगाया है और वही सबको भी जगानेवाला है। इसलिए जो कुछ करना है, वही करेगा। हम उसके हाथ के औजार हो सकते हैं और वही हमें करना चाहिए। ◆

प्रार्थना-प्रवचन

सोपौर (कश्मीर) २९-७-'५९

सियासत और मजहबी तरीकों से समस्या का हल नहीं होगी

आज दिनभर मैं सुनता रहा। सुनानेवाले बहुत थे। उन्होंने खूब सुनाया और हमने खूब सुना। अल्लामियाँ ने हमें सुनने के लिए दो कान दिये हैं और बोलने के लिए दी है एक जबान। इसलिए आदमी को जितना बोलना चाहिए, उससे दुगुना सुनना चाहिए।

मुख्तलिफ पार्टियों की बातें

सोपौर सियासतदाँ लोगों का एक मरकज है। यहाँ मुख्तलिफ पार्टियाँ हैं। हरएक के अपने-अपने खयालात हैं। सभी आये और अपने-अपने खयालात मेरे सामने रखते गये। किसीने भी मेरे सामने कोई झिझक नहीं महसूस की। इससे मुझे बड़ी खुशी हुई। आज यहाँपर मुझे लोगों ने इतना खिलाया कि शायद हज्म न हो पाता, लेकिन देहातों में इतना नहीं खिलाया जाता है, इसलिए हज्म हो जायगा। आपको यह सुनकर ताज्जुब होगा कि मुझे बहुतों ने बहुत सुनाया, लेकिन असली जानकारी कुछ भी नहीं मिली। अगर दो बच्चों का झगड़ा हो और दोनों मेरे पास आकर एक-दूसरे का कसूर बतायें तो दोनों का सुनने के बावजूद कुछ भी जानकारी हासिल नहीं होगी। कोर्ट में हर कोई अपना-अपना दावा पेश करता है तो कुछ जानकारी हासिल होती है; क्योंकि वहाँपर सबूत पेश किये जाते हैं, गवाहों को बुलाया जाता है, जिरह की जाती है, फिर फैसला दिया जाता है, लेकिन यहाँ वैसा नहीं हुआ। मैं तो आज यहाँ आया हूँ और कल यहाँ से चला जाऊँगा। न मैं गवाहों को बुलानेवाला हूँ, न छानबीन करनेवाला हूँ, न जिरह करनेवाला हूँ। इस हालत में जानकारी के नाम पर दोनों एक-दूसरे की गलतियाँ बताते हैं तो सिफर (शून्य) बन जाता है।

हृदय-परिवर्तन की प्रक्रिया

जब हर कोई अपना-अपना कसूर बतायेगा, जान-बूझकर या अनजान में अपने से जो भी गलती हुई; वह बतायेगा, झूठ नहीं, सही बतायेगा, तभी जानकारी हासिल होगी। यही तरीका अपने को सुधारने का तरीका है। इन्सान दुनिया को सुधारने की कोशिश करता है, पर अपने को सुधारने की कोशिश नहीं करता।

आज कुछ लोगों ने मेरे सामने गांधीजी की बातें रखीं, मानो वे गांधीजी को मुझसे ज्यादा जानते हैं। उन्होंने कहा कि "गांधीजी दिलों को पलटाने की, हृदय-परिवर्तन की बात करते थे।" हमें समझना चाहिए कि हृदय-परिवर्तन अपने से शुरू होता है। मैं अपने दिल में सुधार करूँ, तब फिर दूसरे का सुधार हो सकता है। जो भी मेरे पास आते हैं, वे अपनी-अपनी निगाह में अपनी जो गलतियाँ हैं, उन्हें बतायें तो मैं बता सकता हूँ कि उन्हें दुरुस्त कैसे किया जाय! आज तो जो भी आते हैं, वे कहते हैं कि अपनी खुद की तो कोई गलती होती ही नहीं है तो मेरे लिए यह मानना बड़ा मुश्किल हो जाता है। हर कोई दूसरे की गलती बताता है। यहाँ अगर दो ही पार्टियाँ होतीं तो हम एक कान एक को देते और दूसरा दूसरे को। लेकिन ५-६ पार्टियाँ हैं और हमारे ५-६ कान हैं नहीं। इसलिए कुल मिलाकर आज का मेरा वक्त बेकार ही गया। मुझे केवल इतनी ही जानकारी मिली कि अभी तक लोग आपस में मिल-जुलकर काम करने की बात नहीं सीखे हैं। सभीपर अपने-अपने जजबे हावी हैं। इसके अलावा सामनेवाले की बात कोई नहीं सोचता।

[वर्ण-व्यवस्था ?

एक दिन मेरे पास एक शख्स आया। वह वर्ण-व्यवस्था में विश्वास करता था। उसने मुझसे कहा कि सर्वोदय-वाले वर्ग एवं वर्णहीन समाज-रचना की बात क्यों करते हैं?

मैंने उसे कहा—सर्वोदय वाले क्या करते हैं और क्या नहीं, यह तो अभी जाने दीजिये। लेकिन आप तो वर्ण-व्यवस्था में विश्वास करते हैं, इसलिए बताइये कि आपने ये मिल के कपड़े क्यों पहन रखे हैं? वर्ण-व्यवस्था तो कहती है कि बुनकर को बुनाई करनी चाहिए, चमार को जूते बनाने चाहिए, कुम्हार को मिट्टी के बर्तन बनाने चाहिए; क्योंकि यही उनका धर्म है। तो फिर क्या आपकी यह जिम्मेदारी नहीं है कि आप बुनकर का बुना कपड़ा खरीदें, कुम्हार के मिट्टी के बर्तन लें और चमार के बनाये हुए ही जूते पहनें!

सियासी जज़बा

मैं कहना यह चाहता हूँ कि विज्ञान के जमाने में अपना जज़बा पैदा करना बहुत खतरनाक है। इस जमाने में जज़बा कतई पैदा नहीं करना चाहिए, ठंडे दिमाग से सोचना चाहिए। दिल में जोश रहे, क्योंकि उसके बिना कोई काम नहीं कर सकता है, लेकिन उसके साथ दिमाग में होश भी रहे। लेकिन यहाँ तो दिल में भी जोश और दिमाग में भी जोश है। जिस गाड़ी को गार्ड का डिब्बा ही न होकर दोनों तरफ इंजिन ही हो, वह गाड़ी कहीं भी गिर सकती है। जब इंजिन के साथ गार्ड भी हो तो वह गाड़ी को बराबर काबू में रखता है। वैसे ही इन्सान को अपनेपर जब्त रखना चाहिए और दिमाग बिलकुल ठंडा रखना चाहिए। जब मैं देखता हूँ कि सामनेवाला जोश में बात कर रहा है तो मैं समझता हूँ कि अब उसकी बात में कुछ भी ध्यान देने लायक नहीं है। यू० एन० ओ० में जोश से बात की तो अपना केस खत्म। वहाँ तो होश से बात करनी चाहिए। लेकिन सियासतदाँ लोगों में जज़बा पैदा करते हैं और उस जज़बे के सरमाये पूँजी पर अपनी सारी निजादत चलाते हैं। यह गलत बात है।

गांधीजी का सबक

गांधीजी की सबसे बड़ी बात यह थी कि उनसे जब कोई गलती होती तो उसका इजहार करने में उन्हें जरा भी हिचक नहीं मालूम होती। लोगों ने उनकी गलती को उतना बड़ा नहीं समझा,

जितना उन्होंने समझा। उन्होंने कहा, मुझसे हिमालय जितनी बड़ी गलती हुई। उसी तरह हम भी जरा अन्दर देखें कि क्या हमसे भी कोई गलती हुई है? नैशनल कान्फ्रेंस, डेमोक्रेटिक नैशनल कान्फ्रेंस, प्लेबिसाईट फ्रन्ट के भाई एवं पण्डित वगैरह बहुतों की बातें हमने सुनीं, लेकिन सबने इकतरफा बातें पेश कीं। ऐसी हालत में मेरे जैसा क्या कर सकता है?

कार्यकर्ताओं से आशा

यद्यपि ये सारे दान मेरे नाम से मिल रहे हैं, फिर भी मैं तो एक निमित्त मात्र हूँ, कारण-मात्र हूँ। वास्तव में काम करनेवाले तो कार्यकर्ता लोग ही हैं और अब तो भूदान-प्राप्ति के लिए मैं प्रत्यक्ष कुछ भी नहीं करता हूँ। पहले तो मैं लोगों को अपने भाषणों से भूदान के लिए प्रेरित कर सकता था, लेकिन अब तो वह नहीं होता। अब जिन प्रदेशों में मेरी पदयात्रा चल रही है, वहाँके लोगों की भाषा भी मैं नहीं समझता और न अब यहाँ संभव है कि मैं हर गाँव तक पहुँच सकूँ। अतः मुझे तो कार्यकर्ताओं का ही भरोसा है। कार्यकर्ता ही मेरे हाथ-पैर हैं। वे सिर्फ दुभाषिक का ही काम नहीं करते, बल्कि वे ही मेरी आशा हैं। फिर ऐसे बड़े-बड़े आंदोलन कुछेक व्यक्तियों या नेताओं द्वारा तो नहीं चलाये जा सकते। नेताओं का काम केवल कार्यकर्ताओं को प्रेरित और अनुप्राणित करना होता है।

फैसला करनेवाला मैं कौन?

जज को आपने तैनात किया है कि वह दोनों तरफ की बातें सुने और सही फैसला करे। दोनों तरफ के वकील सच्ची बातें दबायेंगे, छिपायेंगे, परन्तु उन सब में कौन सही है, यह देखना जज का काम है। मैं वैसा जज बनने के काबिल नहीं हूँ, न जज बनना ही चाहता हूँ। मेरे लिए ईसा-मसीह का कौल मुफीद है: "जज नाट, दैट यी नाट बी जज्ड" तुम काजी मत बनो, ताकि कोई तुम्हारा काजी न बने। दुनिया का काजी बनकर फैसला मत दो, नहीं तो तुम्हारा फैसला होगा। इसलिए मैं काजी नहीं बनता हूँ, न फैसला देता हूँ, बल्कि जानकारी चाहता हूँ।

तालीम का काम

लोगों ने आज मुझे जानकारी देते समय बड़ी ही अदब से बातें कीं? अदब से बात करना भी तालीम का काम है। जहाँ पार्टियाँ होती हैं, वहाँ हुकूमतवाली पार्टी के मुँह पर ताले लगते हैं। उस पार्टी के लोग अपनी पार्टी की गलतियाँ नहीं बता सकते। नतीजा यह होता है कि वे लोग समाज में जाकर अपनी पार्टी के रवैये का बचाव ही बचाव करते हैं। उनके लिए कोई दूसरा धंधा ही नहीं रहता। विरोधी पार्टीवालों की जबान पर जब्त नहीं रहता है, इसलिए वे बढ़ा-बढ़ाकर बातें रखते हैं, सच-झूठ का खयाल नहीं करते और सुनी हुई बातों पर यकीन रखते हैं ये दोनों ही बातें गलत हैं। होना यह चाहिए कि जिनके मुँह पर ताले लगे हैं, उन्हें जरा अपने ताले खोलने चाहिए और अपनी पार्टी की जो गलतियाँ हुई हों, उनका इजहार दोनों में करना चाहिए। उससे उनका कोई नुकसान नहीं होगा। विरोधी पार्टीवालों को भी जरा अपने मुँह पर जब्त रखना चाहिए। यही सही तालीम का काम है।

दो सैलाब

आपको समझना चाहिए कि अब कश्मीर की बड़ी आजमाइश होनेवाली है। मैं कुरानशरीफ का जिक्र नहीं करना चाहता, क्योंकि एक भाई ने मुझे सावधान, खबरदार करते हुए कहा है कि "तुम्हें जो कुछ कहना है, अपने नाम से कहो। कुरानशरीफ का जिक्र मत किया करो।" मैं मानता हूँ कि अल्ला हम सभीकी आजमाइश करता है। मेरे आने से पहले यहाँ एक सैलाब आया और उसके बाद मैं आया। वह था सैलाब नंबर एक और मैं हूँ सैलाब नम्बर दो। अब इन दो सैलाबों का मुकाबला करने के लिए जितनी भी पार्टीवाले हैं, उन सबको एक होना चाहिए।

कई पार्टी के भाईयों ने मुझसे कहा कि हम सहयोग देना चाहते हैं, लेकिन हुकूमतवाली पार्टी हमारा सहयोग लेती नहीं। इधर हुकूमत करनेवाली पार्टी के लोग कहते हैं कि हम सहयोग लेना चाहते हैं, लेकिन कोई देते नहीं। दोनों इकट्ठा होकर बोलें तो कुछ होगा। सैलाब का मुकाबला करने के लिए आपको अपने तफरके मिटाने चाहिए और गरीबों की खिदमत में जाना चाहिए। अगर आपने ऐसा नहीं किया तो कहना पड़ेगा कि आपने अपना फर्ज अदा नहीं किया।

रूहानी सैलाब

दूसरा सैलाब मेरा है, जो कहता है कि आपके मसले सियासत से या मजहबी तरीके से हल होनेवाले नहीं हैं, ये सभी रूहानियत से हल होंगे। अब इसपर गौर करें कि मैं सही कह रहा हूँ या गलत। आजके जो सियासत और मजहबी तरीके चल रहे हैं, क्या उनसे काफी ताकत बढ़ सकती है? आप मुत्तहद हो सकते हैं? मैं कहना चाहता हूँ कि उससे आपकी ताकत हरगिज नहीं बढ़ सकती। हम आपस में लड़ते-झगड़ते रहेंगे तो दुनिया में उन्हींकी हुकूमत रहेगी, जिनके हाथ में आणविक शस्त्र हैं। हम तो आणविक शस्त्रवालों के हाथ में कठपुतली की तरह रहेंगे, जैसे अभी पाकिस्तान है। पाकिस्तान की हुकूमत अमेरिका के हाथ में है, यह बिलकुल सीधी बात है। वहाँ अमेरिकावाले फौज को ट्रेनिंग देते हैं, अपने अड्डे भी बनाते हैं, इसलिए आजादी का नाम भले ही दिया जाय, लेकिन सही माने में वहाँ अमेरिका का ही कब्जा है। हम भी उसी रास्ते से जायेंगे तो हमपर भी किसी-न-किसी का कब्जा होगा ही। नाम तो रहेगा आजादी का, लेकिन रूप होगा गुलामी का। इसपर आप सोचिये।

अब हमें छोटे दिमाग से नहीं, बल्कि बड़े दिमाग से और बड़े दिल से सोचना होगा। जो छोटे-छोटे तफरके हैं और छोटी-छोटी गलतियाँ होती हैं, उन सबको छोड़कर सारे समाज को इकट्ठा होना चाहिए और यह जो मेरा रूहानी सैलाब है, उसे आपको कुबूल करना चाहिए।

जय ग्रामदान-जयजगत्

इस सैलाब के बावजूद आप अपना ही गाना गाते रहना चाहते हैं तो गाते रहिये और नाचते रहिये। इससे ताकत नहीं बनेगी। आप एक-दूसरे से प्यार करने के बजाय नफरत करते रहेंगे तो 'जय-जगत्' कैसे होगा ? न 'जय-जगत्' होगा, न 'जय-हिन्द' होगा और न 'जय-कश्मीर' ही होगा। होगा 'हार-कश्मीर', 'हार-हिन्द' एवं 'हार-जगत्'।

माली ताकत और रूहानी ताकत

हमें सोचना चाहिए कि हम कौन-सी ताकत बना सकते हैं। क्या हम अमेरिका के मुकाबले की माली ताकत बना सकते हैं ? जब कि हिन्दुस्तान में हर आदमी के पीछे ३-४ एकड़ जमीन है और अमेरिका में १२ तथा रूस में १५ एकड़। इस स्थिति में हम कभी भी उनके मुकाबले की माली ताकत नहीं बना सकते और न फौजी ताकत ही बना सकते हैं। तब हम कौन-सी ताकत बना सकते हैं ? अखलाकी-रूहानी ताकत। अगर यह नहीं बनाना चाहते तो लिख रखिये कि आपके पास कायम के लिए गुलाम बने रहने के सिवाय और कोई चारा नहीं रह जायगा।

ग्रामदान और सामूहिक कृषि

आज एक भाई ने पूछा कि ग्रामदान कम्युनिस्टों के कलेक्टिव फार्मिङ्ग जैसा मालूम होता है, इसलिए आप बतायें कि इन दोनों में क्या फर्क है ? मैंने कहा : "दोनों एक-से नहीं हैं। ग्रामदान के मानी हैं कि कोई अपनी जमीन न बेच सकेगा और न रेहन रख सकेगा। आज तक बेचकर या रेहन रखकर ही गरीबों ने अपनी जमीन खोयी है। इसलिए ग्रामदान के, मालकियत मिटाने के मानी हैं कि आप अपनी जमीन नहीं खो सकते हैं। दूसरी बात यह है कि दस-बारह साल के बाद ग्रामदानी गाँव की जमीन का फिर-फिर से बँटवारा होगा। ग्रामदानी गाँव में जमीन गाँव की रहेगी, स्टेट की नहीं। स्टेट-कंट्रोलवाली बात कम्युनिस्टों की है। उसमें दुनिया में कभी शान्ति और इतमीनान पैदा नहीं हो सकता है। क्योंकि जहाँ स्टेट कंट्रोल करने लगती है, वहाँ किसीको भी किसी तरह की आजादी नहीं रह सकती। इसलिए हम कहते हैं कि गाँव-गाँव की ताकत बने। इधर रहे देहात और उधर दुनिया। दोनों के बीच की सूबा, मुहकमा जैसी जो कड़ियाँ हैं, वे धीरे-धीरे खत्म होंगी। आगे यह सूरत आयेगी कि गाँव का सम्बन्ध सीधा दुनिया से होगा। आज बीच की कड़ियाँ मौजूद हैं, लेकिन हम चाहते हैं कि गाँव आजाद हो, अपने पाँवों पर खड़ा हो। इसीका नाम है ग्रामदान।

ग्रामदान में यह जरूरी नहीं है कि जमीन इकठ्ठा की जाय या किसान का इनीशिएटिव (अभिक्रम) खत्म किया जाय। इसलिए ऐसी गलतफहमी न करें कि ग्रामदान और कलेक्टिव फार्मिंग एक ही चीज है। हालाँकि वैसी गलतफहमी के लिए गुंजाइश है। घोड़े और गधे में गलतफहमी के लिए गुंजाइश है, लेकिन दोनों में फर्क है। ग्रामदान में मालकियत सब की रहेगी और हरएक को पूरी आजादी रहेगी।

ग्रामदान का अर्थ है मानवीय आजादी का विकास। यदि किसी तरीके से यह विकास रुकता हो तो उस तरीके को छोड़ने में मैं एक क्षण की भी देर नहीं करूँगा। यदि कलेक्टिव फार्मिंग से किसान का अभिक्रम और आजादी नष्ट होती हो तो ग्रामदान में उसके लिए स्थान नहीं है। •••

चिन्तन के क्षणों में

अध्ययन की प्रेरणा के लिए तपस्यामय जीवन

१९२४ की बात है। मैंने अर्थशास्त्र का अध्ययन शुरू किया था। अपनी भाषाओं में ज्यादा किताबें नहीं थीं, इसलिए मैंने तरह-तरह की अंग्रेजी किताबें पढ़ीं और उस अध्ययन की प्रेरणा के लिए उन दिनों मैंने रोज का गुजर दो आने में किया।

उस वक्त मैं तीन दफा खाता था। सात पैसे का खाना और एक पैसे की लकड़ी, यही मेरा हिसाब था। सात पैसे में कुछ ज्वार की रोटी, मूँगफली, गुड़, दाल, मुठ्ठी-भर सब्जी थोड़ा नमक और इमली, इतनी चीजें आती थीं। उन्हीं दिनों पू० बापू के उपवास के कारण मेरा देहली जाना हुआ। वहाँ ज्वारी नहीं मिलती थी, गेहूँ ही मिलता था, जो महँगा था। इसलिए मुझे वहाँ मूँगफली छोड़नी पड़ी। मेरा यह सिलसिला सालभर चला।

कोई भी पूछ सकता है कि अर्थशास्त्र के अध्ययन का आठ पैसे के खाने के साथ यानी इस तपस्या के साथ क्या सम्बन्ध है ? कितने ही लोग अर्थशास्त्र का अध्ययन करते हैं तो उसके साथ मोटे-ताजे भी होते हैं। लेकिन मेरा मानना है कि अध्ययन तभी हजम होता है, जब हम अपने को उसके अनुकूल कर लेते हैं। अपनी इन्द्रियों को, प्राणों को कस लेते हैं। मुझे अर्थशास्त्र के उस अध्ययन का बहुत लाभ हुआ और निकम्मा अर्थशास्त्र ध्यान में रहा ही नहीं। टालस्टाय, रस्किन वगैरह खास अर्थ-शास्त्रकारों का अच्छा अध्ययन हुआ।

मैंने दो साल तक बहुत एकाग्र होकर वेद का अध्ययन किया था। उस वक्त भी मैं दूध-भात पर ही रहता था दूध-भात के सिवाय मैं तीसरी कोई चीज लेता ही नहीं था। इस तरह विचारों के साथ जीवन का ताल्लुक जोड़ने की मुझे आदत है, उसे मैं बहुत जरूरी समझता हूँ।

[पद-यात्रियों के बीच]

अनुक्रम

१. समाज-विज्ञान का पहला सूत्र—बाँट-बाँटकर खाओ.
बटलख २८ जुलाई '५९ पृष्ठ ५८९
२, सियासत और मजहबी तरीकों से समस्या का हल...
सोपौर २९ जुलाई ,, ५९०
३. अध्ययन की प्रेरणा के लिए तपस्यामय जीवन...
(कश्मीर)

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : ३३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी